सब धरा रह जायेगा

मौहर सिंह
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की।

इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।
लाख कोशिश हम करें पर, साथ कुछ ना जायेगा।।
हम हैं बैठे सोचकर, मृत्यु हमें ना आयेगी।
काम उल्टे सीधे कर लें, बात सब बन जायेगी।।
बस इसी भ्रम में रहे हम, और कुछ सोचा नहीं।
पर विधाता के यहां है, पूरा बही खाता सही।।
इस बही खाते से सबका, भाग्य लिखा जायेगा।
इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।
माल खाते मुफ्त का, और जिस्म की खेती हरी।
दिल का रकबा शून्य है, और पाप की लुटिया भरी।।
सांच को है दूर फेंका, दिल हुआ बेईमान।
चन्द दौलत के लिए, सब खो दिया ईमान।।
ईमान ही यदि लुट गया, तो शेष क्या रह जायेगा।
इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।।
कुछ तो बनते सन्त हैं, और कुछ बनते भक्त हैं।
पास से जब इनको देखा, दुनियां में आशक्त हैं।।
ये नहीं बन सकते, दुनियां के कभी आदर्श हैं।
ऊपर से कंचन की काया, अन्दर से विष ग्रस्त हैं।।
सोच लो अच्छी तरह, ये रूप नही चल पायेगा।
इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।।
सावन के अंधे से पूछो, अब ऋतु है कैसी हो रही।
बारह महीने वो कहे, हरियाली अच्छी हो रही।।
हैं लाख उसको हम कहे, पतझड़ हरा होता नहीं।
सूखा है चारों ओर लेकिन, बात वो सुनता नहीं।।
सावन के अंधे को यहां पर, कौन समझा पायेगा।
इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।
जीवन पूरा चला गया, यों ही सदा भ्रम में रहे।
दूजों के कष्टों में कभी, हिस्सा नहीं हम ले सके।।
आसन पे ऊंचे बैठकर, नीचे कभी झांका नहीं।
दुखियों के दुःखों को कभी, नजदीक से जाना नहीं।।
फिर ऊंचे उठने का तुम्हारा, कौन यश है गायेगा।
इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।
ये मौहर सिंह, सबसे कहे, काया पुनः मिलनी नहीं।
है चार दिन की चांदनी, फिर चांद के दर्शन नहीं।।
ये वक्त गुजरा जा रहा, फिर हाथ ना आये कभी।
अच्छा है सच स्वीकार लें, वक्त के रहते अभी।।
सतकर्म का प्रतिफल यहां, मुक्ति हमें दिलवाएगा।
इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।